8

गणेशद्वादशनामस्तोत्र

प्रिय शिक्षार्थी पूर्व पाठ में आपने देवी सूक्त/वाक् सूक्त के माध्यम से वाक् के महत्त्व को जाना। इस पाठ में हम गणपति की स्तुति करने की प्रक्रिया को जानेगे। साथ ही आप इस स्तुति का महत्त्व भी समझ पायेंगे। भगवान गणपति हमें सभी प्रकार के संकटो से बचाते है। इसलिए हमेशा गणपति की स्तुति सर्वप्रथम की जाती है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- गणपति की स्तुति प्रक्रिया को समझ पाने में; और
- गणपति की विशेषताएं समझ पाने में ।

8.1 गणेशद्वादशनामस्तोत्र

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम् ।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यं आयुःकामार्थसिद्धये ।। १ ।।

praNamya shirasA devam gaurI-putram vinAyakam |
bhaktAvAsam smaren_nityam AyuH-kAmArtha-siddhaye || 1 ||

पार्वतीनन्दन श्रीगपति जी को सिर झुकाकर प्रणाम करके अपनी आयु, कामना और अर्थ की सिद्धि के लिये उनका नित्य स्मरण करें।

प्रथमं वक्रतुण्डं च एकदन्तं द्वितीयकम् ।
तृतीयं कृष्णपिङ्गाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम् ।। २ ।।

लम्बोदरं पञ्चमं च षष्ठं विकटमेव च ।
सप्तमं विघ्नराजेन्द्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम् ।। ३ ।।

नवमं भालचन्द्रं च दशमं तु विनायकम् ।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम् ।। ४ ।।

द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः ।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरः प्रभुः ।। ५ ।।

prathamam vakra-tuNDam cha eka-dantam dvitIyakam |

tRitIyam kRiShNa-pi~NgAkSham, gaja-vaktram chaturthakam || 2 ||

lambodaram pa~nchamam cha ShaShTham vikaTameva cha | saptamam vighna-rAjendram dhUmra-varNam tathAShTamam || 3 ||

navamam bhAla-chandram cha dashamam tu vinAyakam |

ekAdasham gaNa-patim dvAdasham tu gajAnanam || 4 ||

dvAdashaitAni nAmAni trisandhyam yaH paThen_naraH |

na cha vighna-bhayam tasya sarva-siddhi-karaH prabhuH || 5 ||

पहला वक्रतुण्ड, दूसरा एकदन्त, तीसरा कृष्णपिंगाक्ष, चौथा गजवक्त्र। पाँचवां लम्बोदर, छठा विकट, सातवाँ विघ्नराजेन्द्र, आठवाँ धूम्रवर्ण। नवाँ भालचन्द्र, दसवाँ विनायक, ग्यारहवाँ गणपति और बारहवाँ गजानन। इन बारह नामों का जो व्यक्ति तीनों संध्याओं (प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल) में पाठ करता है, उसे किसी भी तरह के विघ्न का भय नहीं रहता है। इस प्रकार का स्मरण (बारह नामों का स्मरण) सभी सिद्धियाँ देने वाला होता है।

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम् ।। ६ ।।

vidyArthI labhate vidyAm dhanArthI labhate dhanam |
putrArthI labhate putrAn_mokShArthI labhate gatim || 6 ||

इससे विद्याभिलाषी विद्या, धन के अभिलाषी धन, पुत्र की इच्छा वाले पुत्र तथा मुमुक्षु मोक्षगति को प्राप्त करते हैं।

जपेद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ।। ७ ।।

japed_gaNapati-stotram ShaDbhir_mAsaiH phalam labhet |
saMvatsareNa siddhim cha labhate nAtra saMshayaH || 7 ||

जो इस गणपतिस्तोत्र का जप करता है, उसे छः महीने में ही मनोवांछित फल, प्राप्ति होती है और एक वर्ष में पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इसमें किसी प्रकार का कोई सन्देह नहीं है।

अष्टेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत् ।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः ।। ८ ।।

aShTebhyo brAhmaNebhyashcha likhitvA yaH samarpayet |

टिप्पणी

tasya vidyA bhavet_sarvA gaNeshasya
prasAdataH || 8 ||

जो पुरुष इसे लिखकर आठ विद्वान पुरूषों को समर्पण करता है, गणेश जी की कृपा से उसे सब प्राकर की विद्या प्राप्त हो जाती है।

पाठगत प्रश्न– 8.1

(1) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. देवतापूजनार्थाय ..... करोम्यहम् ।
2. सुमुखश्चौकदन्तश्च ..... गजकर्णकः ।
3. धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो ..... गजाननः ।
4. ..... विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
5. सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै ..... नमः ।।

आपने क्या सीखा?

- गणपति पूजा का ज्ञान।
- गणपति पूजा की प्रक्रिया।

पाठांत प्रश्न

1. गणपति के 12 नामों का उल्लेख कीजिए।

उत्तरमाला

8.1

(1)

1. घण्टानादं
2. कपिलो
3. भालचन्द्रो
4. विद्यारम्भे
5. गणाधिपतये